**19 सितम्बर 2017 को छत्तीसगढ़ के बेमेतरा में आयोजित ''शिक्षक सम्मान समारोह'' में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण।**

1. यह बहुत हर्ष का विषय है कि आज छत्तीसगढ़ के ''उन्हारी जिला'' (fertile land and highly productive district) के रूप में विख्यात बेमेतरा जिले में आयोजित ''शिक्षक सम्मान समारोह'' के अवसर पर मुझे आप सबके बीच आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। माननीय मुख्यमंत्री श्री रमन सिंह जी का मैं अभिनंदन करती हूं जिन्होंने छत्तीसगढ़ एवं यहां के निवासियों के सर्वांगीण विकास को प्राथमिकता दी है एवं मुझे गर्व है कि यह प्रदेश उनके नेतृत्व में सबसे तीव्र गति से विकास करने वाला राज्य बन गया है।

**2. छत्तीसगढ़ से मेरा और मध्यप्रदेश का विशेष स्नेह, सम्पर्क और सम्बन्ध रहा है। संगठन में रहने के दौरान छत्तीसगढ़ की प्रभारी होने के नाते मैं यहां आती रही हूं। रमन सिंह जी यहां उपस्थित हैं जिनके नेतृत्व में इस क्षेत्र में विकास के लिए निरंतर कार्य हो रहे हैं। उनके good governance के परिणाम सबके सामने है। इस पूरे राज्य में सार्वजनिक वितरण प्रणाली बेहतरीन ढंग से काम कर रहा है। छत्तीसगढ़ का कोरबा, Power Capital of India के रूप में पूरे देश में विख्यात है और यहां ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में पर्याप्त मात्रा में विद्युत की आपूर्ति दी जा रही है। धान का कटोरा कहा जाने वाला यह प्रदेश आज देश के सर्वाधिक स्टील उत्पादकों में से एक है और यहां का लौह अयस्क दुनियाभर में अपनी सर्वश्रेष्ठ क्वालिटी के लिए जाना जाता है। ऐसे प्रदेश में आना मेरे लिए सदैव स्मरणीय रहा है।**

**3. छत्तीसगढ़ का बहुत प्राचीन इतिहास है। रामायण एवं महाभारत में दंडकारण्य क्षेत्र के नाम से इसका उल्लेख मिलता है। दंडकारण्य अपने नैसर्गिक सौन्दर्य तथा आध्यात्मिक महत्व के लिए जाना जाता था। प्राचीन एवं मध्ययुगीन भारत में दक्षिण कौशल के रूप में यह सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र था। एक तरह से पूरा छत्तीसगढ़ ही अपने नैसर्गिक सौन्दर्य, प्राकृतिक संसाधनों, खनिज संपदा, वन क्षेत्र, जैविक विविधता के लिए मशहूर है। इसकी अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत भी मशहूर है। यहां की लोक कला, संगीत एवं नृत्य विशेषकर पंडवानी नृत्य, विदेशों में भी लोगों का मन आकर्षित करता है। यहां के लोग अपनी लगन, परिश्रमशीलता एवं उद्यमशीलता के लिए जाने जाते हैं।**

**4.** महान दार्शनिक, शिक्षक, चिंतक एवं स्वतंत्र भारत के दूसरे राष्ट्रपति 'भारत रत्न' डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के स्मरण में आयोजित इस **''शिक्षक सम्मान समारोह''** में उपस्थित होकर उन शिक्षकों का सम्मान करना मेरे लिए बहुत गर्व की बात है, जिन्होंने अपने कर्त्तव्य को धर्म समझकर राष्ट्र निर्माण के उद्देश्य से विद्यार्थियों का न केवल मार्गदर्शन दिया है, बल्कि बड़ी ही श्रद्धा, लगन, परिश्रम और मनोयोग से उनके अंदर प्रतिभा एवं आदर्श नागरिक के गुणों को आत्मसात कराया है। इससे उनका स्वयं का सम्मान तो बढ़ा ही है, वास्तव में यह भारतीय संस्कृति, परम्परा एवं आदर्शों की पुनर्स्थापना करने योग्य कार्य है। यह तो नित्य एवं सनातन प्रक्रिया है एवं संस्कृति के संवर्धन एवं विस्तार का मार्ग भी। **शिक्षक और डॉक्टर कभी रिटायर नहीं होते, वे तो जब तक जीवित रहते हैं, समाज के कल्याण हेतु समर्पित ही रहते हैं। एक समाज को शिक्षित करता है, तो दूसरा समाज के स्वास्थ्य की रक्षा में लीन रहता है। उनकी समाज के प्रति जिम्मेदारी सदैव बनी रहती है।**

5. शिक्षक शब्द मन में बहुत तरह के भाव लाता है। **''गुरूः ब्रह्मा गुरूः विष्णु''** के स्मरण के साथ–साथ वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य, ऋषि सांदीपनि के उदाहरण हमारे समक्ष आते हैं। आधुनिक युग में राजा राम मोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, रवीन्द्रनाथ टैगोर, गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, रामानुज आचार्य एवं स्वामी विवेकानन्द जैसे महान शिक्षाविदों एवं विचारकों के विचार एवं उनकी छवि हमारे सामने आती है। मुझे विश्वास है कि आज आप सब शिक्षक, जो यहां सम्मानित हो रहे हैं उनमें वही सेवा, समर्पण, ज्ञान की ललक व प्राप्त ज्ञान को विद्यार्थियों को प्रदान करने के लिए निरंतर प्रतिबद्धता मौजूद है जो उनमें थीं। ज्ञान के दीप को प्रज्ज्वलित कर उस ज्योति को आगे बढ़ाने का संकल्प लेने वाले आप सभी शिक्षकगण बधाई के पात्र हैं। **आप समृद्धशाली भारत के निर्माण के इमारत की नींव हैं।**

6. मैं उन सभी महान शिक्षकों को हृदय से धन्यवाद देती हूं कि जिन्होंने राष्ट्र निर्माण के लिए कठिन तपस्या एवं त्याग करते हुए सम्पूर्ण देश को ऐसी विभूतियां दी हैं जिन्होंने पूरे विश्व में हमारा सिर गर्व से ऊंचा कर दिया है। मैं सभी विद्यार्थियों को उनकी सफलता पर बधाई देती हूं एवं उन सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूं। मैं अपेक्षाकृत कम सफलता पाने वाले विद्यार्थियों से यह भी कहना चाहती हूं कि आप सबमें सारी क्षमताएं हैं, बस आवश्यकता है अपने–आपको जानने की। यदि वे भी अपने लक्ष्य को निर्धारित करके उसके अनुरूप अध्ययन, मनन और चिंतन करेंगे तो वे सफलता के शिखर को प्राप्त कर सकते हैं।

7. हम सब जानते हैं कि जीवन को सुसभ्य व सुसंस्कृत बनाने में शिक्षा एवं शिक्षक का बहुत योगदान है। आचार्य, गुरू अथवा शिक्षक का धर्म होता है कि अपने शिष्यों में विद्वता, सहनशीलता, बुद्धिमता, विनम्रता, अनुशासन और आज्ञापालन

के गुणों के साथ सतत् साधना, लगनशीलता, वैज्ञानिकता, दार्शनिकता, निरंतर अध्ययन के गुणों के साथ–साथ समरसता एवं दयालुता के भाव भरें। ये सद्गुण ही तो देश को एक आदर्श नागरिक प्रदान कर सकते हैं। हमारे शिक्षकों द्वारा दिए गए कुशल प्रशिक्षण का ही परिणाम है कि अकेले अमेरिका की सिलिकॉन वैली में 30 हजार भारतीय इंजीनियर काम करते हैं। पूरी दुनिया में 3 करोड़ भारतीय विभिन्न तकनीकी या प्रबंधन के क्षेत्र में अपनी निपुणता साबित करते हैं।

8. **राष्ट्रनिर्माण में गुरू का विशेष महत्व है और प्रथम गुरू माता ही होती हैं जो सर्वप्रथम बच्चों को मानवीय मूल्यों, संस्कारों एवं सद्गुणों की सीख देती है। फिर परिवार, बच्चों के नैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक सभी प्रकार के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब बालक–बालिकाओं की औपचारिक शिक्षा प्रारम्भ होती है तब शिक्षकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। उनकी पारखी दृष्टि प्रत्येक बच्चे की प्रतिभा को पहचानकर उनको तराशने एवं गढ़ने का कार्य करती हैं और उन्हें रोजगार, व्यवसाय, जीवन–यापन करने और समाज के प्रति उनके उत्तरदायित्वों को निर्वहन करने में सक्षम बनाती है। विद्या प्रदान करने में शिक्षकों द्वारा किए गए परिश्रम, साधना, चिंतन एवं सम्यक् मार्गदर्शन का भी उतना ही महत्व है जितना कि विद्यार्थी द्वारा किए गए स्वाध्याय, चिंतन, मनन एवं पठन–पाठन का।**

9. शिक्षा हमारे समाज में महिला–पुरुष समानता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। सही कहा गया है कि **''जब आप किसी पुरुष को शिक्षित करते हैं, तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं और जब आप एक महिला को शिक्षित करते हैं, तो आप पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं।''** शिक्षित महिला में बेहतर व्यक्ति, बेटी, बहन, पत्नी और मां बनने के लिए बेहतर

कौशल, ज्ञान और आत्मविश्वास होता है। शिक्षा एक ऐसा शक्तिशाली साधन है जिसके माध्यम से लड़की अपने साथ–साथ अपने परिवार को भी सशक्त बना सकती है।

10. हमारे बच्चों के जीवन में स्कूली शिक्षा का समय बहुत खास होता है क्योंकि इस समय जिन संस्कारों के बीज बोये जाते हैं, वह समय आने पर अंकुरित होते हैं और एक बच्चा परिपक्व वयस्क बनता है। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि विद्यालय स्तर पर ही सही संस्कार दिए जाएं। **भारत रत्न Nelson Mandela ने भी कहा है कि 'Education is the most powerful weapon we can use to change the world.'**

11. अच्छी शिक्षा के लिए चार चीजें बहुत महत्वपूर्ण हैं। पहली पहुंच (Access), दूसरी समता (Equity), तीसरी गुणवत्ता (Quality) और चौथी चीज है प्रासंगिकता (Relevance)। हर व्यक्ति, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष उनके लिए शिक्षा affordable होनी चाहिए। न केवल affordable होना चाहिए बल्कि सभी को समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलना चाहिए। शिक्षा ऐसी हो, जो पूरे विश्व में उपयोग में लाई जा सके।

12. भारत में प्राचीन काल से ही शिष्य–गुरू की परम्परा रही है एवं इस परम्परा ने जहां ऋषि वशिष्ठ, संदीपन, परशुराम, द्रोणाचार्य जैसे स्वनामधन्य गुरू के गुरूकुलों से राम, कृष्ण, कर्ण एवं अर्जुन जैसे शिष्य निकले, जिन्होंने अपना जन्म तो सार्थक किया ही, साथ ही सम्पूर्ण विश्व को सद्ज्ञान, सदाचार एवं सन्मार्ग दिखलाया एवं भारत को जगद्गुरू की पदवी दिलाई।

13. मित्रों! आज 21वी शताब्दी में बेशक शिक्षा का स्वरूप बदल गया हो और शिक्षक की भूमिका में भी कुछ परिवर्तन आया हो, पर सतत् विचार, अध्ययन, कर्मनिष्ठा और उच्च नैतिक आचरण का पाठ शिक्षक को आज भी वैसे ही देना है। यह समयातीत विषय है। शिक्षक की भूमिका समाज में सदैव वही रहेगी। छात्र, समाज और व्यवस्था सभी के लिए विद्वान, ज्ञानवान और चरित्रवान शिक्षक आज भी सम्मान के पात्र हैं। शिक्षक का सबसे बड़ा पुरस्कार तो वो छात्र–छात्राएं हैं जो उसे चाहते हैं, उनसे सीखना पसन्द करते हैं, उन्हें रोल मॉडल मानते हैं।

14. एक बेहतर शिक्षक अपने छात्रों का न केवल गुरू होता है, पर उनका परम मित्र और गाइड भी होता है, जो उनके हर आचरण का मास्टर व हर कर्म का मेंटर भी है। **वास्तव में शिक्षक वह शक्ति पुंज है, जो कक्षाओं में भविष्य रच रहा है।** स्वामी विवेकानंद के शब्दों में 'शिक्षा वह जानकारी नहीं है जो हमारे दिमाग में डाली जाती है और जिसे समझे बिना ही हम अपना जीवन बिता दें। शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसमें विचारों के समावेश से मानव निर्माण, चरित्र निर्माण और जीवन निर्माण होता है।' Intelligence plus character is the real meaning of education.

16. हमारे देश में योग्य शिक्षकों की कभी भी कमी नहीं रही है। चाहे मौर्यकाल में चाणक्य हों अथवा आधुनिक युग में ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, गुरू रविन्द्रनाथ टैगोर तथा महर्षि अरविन्द जैसे व्यक्तित्व हों, उन्होंने ज्ञान के प्रकाश से विद्यार्थियों का जीवन आलोकित करते हुए समाज को सदैव सही राह दिखलाई और अपनी शिक्षाओं के माध्यम से सम्पूर्ण राष्ट्र की आध्यात्मिक चेतना में प्राण फूंके हैं।

17. **वर्तमान में भी ऐसे योग्य शिक्षकों की कमी नहीं है चाहे वे रमाकांत आचरेकर हों या पुलेला गोपीचन्द, जिन्होंने सचिन तेंदुलकर जैसे क्रिकेटर एवं पी.वी. सिन्धु**

**एवं के. श्रीकान्त जैसे प्रख्यात बैडमिंटन खिलाड़ी दिए, वहीं पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का नाम भी श्रद्धा से लिया जाता है जो आजीवन विद्यार्थियों को शिक्षित करने का कार्य करते रहे, उन्हें कुछ नया करने को प्रेरित करते रहे। पटना में सुपर थर्टी के माध्यम से प्रतिवर्ष कई विद्यार्थियों को आई.आई.टी. जैसे प्रतिष्ठित संस्था में प्रवेश दिलाने के लिए श्री आनन्द कुमार ने न केवल विद्यार्थियों के साथ परिश्रम, त्याग और साधना की है बल्कि उनके जुनून को अपना जुनून बना लिया है। वे भी प्रशंसनीय हैं।**

18. गुरू का कर्त्तव्य ही शिष्यों को सुयोग्य नागरिक बनाना है। इस संबंध में कबीर दास का यह कथन सर्वाधिक प्रासंगिक हैः–

**''गुरू कुम्हार शिष्य कुम्भ है, गढ़ि–गढ़ि काढ़ै खोट।**
**अन्तर हाथ सहार दे, बाहर बाहै चोट।।''**

(अर्थात् गुरू कुम्हार है और शिष्य मिट्टी के कच्चे घड़े के समान है। जिस तरह घड़े को सुन्दर बनाने के लिए अन्दर हाथ डालकर बाहर से थाप मारता है ठीक उसी प्रकार शिष्य को कठोर अनुशासन में रखकर अंतर से प्रेम भावना रखते हुए शिष्य की बुराइयों को दूर करके संसार में सम्माननीय बनाता है।)

19. आप सभी ने विपरीत परिस्थितियों में भी उतने ही मनोयोग एवं श्रद्धा से शिक्षण का कार्य किया है, इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र है। माननीय मुख्यमंत्री जी यहां उपस्थित हैं, जिन्होंने छत्तीसगढ़ मे शिक्षा के विकास के लिए सराहनीय प्रयास किया है। नक्सलवाद से पीड़ित राज्यों में शिक्षा बदलाव का मूल अस्त्र सिद्ध हो सकती है। शिक्षक सभ्य और शिक्षित समाज के निर्माण की दिशा में कार्य करते हैं एवं वास्तव में समाज के शिल्पकार होते हैं।

20. आज के समय में शिक्षण की प्राथमिकताएं बदल रही हैं। अतः, इस माडर्न युग में युगानुरूप शिक्षा पद्धति में व्यापक बदलाव देखने को मिल रहे हैं। **Edusat के माध्यम से आज देश के प्रत्येक हिस्से में रहने वाले विद्यार्थी विभिन्न विषयों में सरलतापूर्वक शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। यह तकनीक का ही प्रभाव है कि यदि कोई प्रोफेसर आई.आई.टी, दिल्ली में Physics में कोई लेक्चर दे रहे हैं, तो उसे गांव में रहनेवाला कोई विद्यार्थी भी सुन सकता है और लाभान्वित हो सकता है। यदि पटना में कोई प्रोफेसर गणित का लेक्चर दे रहे हैं, तो महाराष्ट्र के सुदूर गांव के विद्यार्थी को भी सीखने को मिल सकता हैं। अब तो मोबाइल एप्प भी विद्यार्थियों के लिए अध्ययन में सहयोगी सिद्ध हो रहे हैं। अब technology के प्रसार के साथ–साथ शिक्षा देने के तरीके में innovations आ रहे हैं। शिक्षकगण ऐसे innovative तरीकों को अपनाकर शिक्षा में आमूलचूल परिर्वतन ला सकते हैं एवं अध्यापन के तरीके को और रोचक बना सकते हैं।**

21. शिक्षकों को इक्कीसवीं शताब्दी को एक ऐसी शताब्दी बनाने की जिम्मेदारी निभानी होगी जिसमें शिक्षा, ज्ञान, उद्यमिता (Entrepreneurship), टेक्नोलॉजी (technology) और नई खोज (Innovation) के केंद्र के रूप में भारत को गौरवशाली स्थान प्राप्त हो सके। यहाँ बैठे शिक्षकों और बच्चों पर शिक्षा की विरासत को आगे ले जाने की विशेष जिम्मेदारी है। **आइये, सब मिलकर पढ़े, भारत बढ़े और विकसित भारत के नारे को साकार करें।**

22. **हमारे पूर्व वैज्ञानिक राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा था और मैं इसे उद्धृत करती हूं:–**

**"The purpose of education is to make good human beings with skill and expertise. Enlightened human beings can be created by teachers".**

23. आप सब प्रतिभावान विद्यार्थियों एवं योग्य शिक्षकों से मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई है। अंत में, मैं सभी होनहार विद्यार्थियों और शिक्षकों को उनके प्रयासों, योगदानों और उपलब्धियों के लिए बधाई देती हूँ। मैं शिक्षक सम्मान समारोह समिति के भावी प्रयासों में सफलता की भी कामना करती हूँ।

धन्यवाद।

———